Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 5 | ISSN : 2582-0095

नीतिशतक में सामाजिक चेतना

प्रदीप कुमार
वरिष्ठ शोध अध्येता,संस्कृत विभाग
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय) प्रयागराज (उ.प्र.)

Article Info
Volume 3 Issue 5
Page Number : 134-136
Publication Issue :
September-October-2020
Article History
Accepted : 15 Oct 2020
Published : 26 Oct 2020

शोधसारांश– समाज का वास्तविक अर्थ एक साथ मिलकर रहना है। जब लोग सामाजिक आदर्श से प्रभावित होकर उस आदर्श की प्राप्ति के लिए आगे बढ़ते है तो वही समाज कहलाता है तथा सामाजिक चेतना का तात्पर्य है कि जो मानव जीवन को महान और आदर्श व्यक्तित्व की प्राप्ति कराए, सामाजिक चेतना का बीज एक साथ चलने और चिंतन करने में हैं जिसमें बौद्धकि विकास के साथ मनुष्य की अभिव्यक्तियों में वृद्धि होती है।

मुख्यशब्द- आचार्य भर्तृहरि, नीतिशतक, सामाजिक, चेतना ।

प्राचीन काल में विभिन्न ग्रन्थों के माध्यम से सामाजिक चेतना जागृति करने का प्रयत्न किया गया जिसमें नीति शास्त्र से सम्बन्धित ग्रन्थ शुक्र नीति चाणक्य नीति, नीतिशतक प्रभृति अनेक ग्रन्थों का प्रतिपादन किया गया है।

काव्य के द्वारा मनुष्यों में चरित्र निर्माण किया जा सकता है। काव्य यश प्रदान करने वाली अर्थकारी, व्यवहार ज्ञान प्रदान करने वाली तथा अमंगल का हरण करती है।

काव्य यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतर क्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्ता सम्मितयोयदेशयुजे।।[1]

आचार्य भर्तृहरि ने लोकहित तथा सामाजिक चेतना के लिए नीतिशास्त्र का लेखन किया, जिसका नाम नीतिशतक है।

मानव कल्याण के लिए समाज को सुव्यवस्थित, सुखी, समृद्ध एवं निरूपद्रव करने के लिए जिस प्रक्रिया का उपयोग किया जाता है। उसे नीति कहते है। नीति की परिभाषा करते हुए जयमङ्गला नामक टीका में परम् विद्वान ने लिखा है कि–

“प्रत्यक्ष-परोक्षाऽनुमा-प्रमाणत्रय-निर्णीत
देश-कालानुकूल्यें सति क्रियानुष्ठानं नीतिः[2]

नीति शब्द नी+क्तिन और शतकम् की व्युत्पत्ति शत् + कन् प्रत्यय से नीत्याः शतकम तम् अधिकृत कृतं पद्यम् इति नीतिशतकम् बनता है।

नीतिशतकम् में कुल 121 श्लोक है जिसमें लोक जीवन के व्यवहार की अनेक सूक्तियाँ तथा आधुनिक परिप्रेक्ष्य में सर्वजन कल्याण की भावना से उचित दृष्टिकोण के साथ राष्ट्र का वैयक्तिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक

---

[1] काव्य प्रकाश

[2] चाणक्य नीति दर्पण

Copyright : © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

सांस्कृतिक गतिविधियों का विचार करके मानव कल्याण किया जा सकता है। इसके द्वारा सामाजिक चेतना लाने का प्रयास किया है जिसे भर्तृहरि के नीति श्लोकों के माध्यम से सरलता से समझ सकते है परन्तु नीति वाक्यों से प्राप्त ज्ञान गूढ़ रहस्यों से युक्त होने के कारण सामाजिक जीवन को कठोर अनुभवों के द्वारा ज्ञात कर सकते है।

आचार्य भर्तृहरि जी ने भी लोक हित तथा सामाजिक चेतना के लिए नीतिशतक में उस समय की सामाजिक स्थिति का वर्णन करते हुए कहते है कि – विद्वान वर्ग ईर्ष्याग्रस्त, राजा लोग गर्वयुक्त, शिक्षित लोग अज्ञानता की वशीभूत होकर किंकर्तव्यमूढ़ हो गये थे, इसके फलस्वरूप लोग अनैतिक कृत्यों में रुचि रखते थे। आधुनिक समय में विचार करने पर यह बात दृष्टिगोचर हो रही है कि आज भी समाज में नैतिकता का जो पतन हुआ है उसे नीतिशतक के गहन अध्ययन करके तथा उससे अनुभव को प्राप्त करके नैतिक तथा अनैतिक कार्यो को जानकर संस्कृति और सभ्यता के पतन से बचाया जा सकता है। समाज में नैतिकता का पतन होने के कारण संस्कृत भाषा का जो उपयोग हमारे लिए आवश्यक एवं कल्याणकारी है उसका तिरस्कार होने के कारण विद्वानों की कमी होती जा रही , आवश्यकता है आज के युवा वर्ग को नीतिशतक का अध्ययन कराते हुए सामाजिक चेतना जागृति कराना जिससे दुर्गुणों से बचाया जा सके, क्योंकि पाश्चात्त्य संस्कृति तथा सभ्यता के प्रभाव से प्रभावित होकर भौतिकता की ओर अत्यधिक झुकाव उन्हें काल का ग्रास बना देता है।

किसी समाज की संस्कृति तथा सभ्यता का पतन प्रदर्शित करने के लिए नीतिशतक में कहा गया है कि–

बौद्धारो मत्सरग्रस्ता: प्रभव: स्मय दूषिता:।
अबोधोपहताश्चान्ये जीर्णमङ्गे सुभाषितम्।।[3]

गङ्गा पहले स्वर्ग से शिव के मस्तक पर गिरी उनके मस्तक से हिमालय पर्वत पर गिरी वहाँ से पृथ्वी से बहती–बहती समुद्र में जा गिरी। इस तरह ऊपर से नीचे गिरना आरम्भ होने पर गङ्गा नीचे ही नीचे गिरी। उसी प्रकार विवेक भ्रष्ट होकर मधपान सेवन, धूतक्रीडा व्यसन से युक्त होकर युवा पीढ़ी अपनि मानव जीवन को नष्ट कर रही है और पुन निम्न योनियों में चला जाता है जहाँ उसे सत्कर्म करने का अवसर प्राप्त नहीं होता है। विचार शक्ति ही हमारी सच्ची रक्षिका तथा मार्ग–प्रदर्शिका होती है। जो मानव प्रत्येक बुरे और उच्छे कार्यों को करने में नीतिशास्त्र के प्रयोग करके चिन्तन नहीं करते उनकी दुर्गति निश्चित होती है, इसीलिए कहा गया है–

शिर: शार्वं स्वर्गात्पतति तिधरं, शिरसस्तत्क्षि
महीद्राादुत्तुंगादवनिमवनेश्चापि जलधिम।
अधोऽधो गङ्गेयं पदमुपगता स्तोकमथवा,
विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपात: शतमुख:।।6।।

विद्या मनुष्य का गुणोत्कर्ष है, जिससे वह साधारण रूप से इतर पशुओं से भिन्न समझा जाता है।

साहित्यसजीतकला विहीन: साक्षात्पशु: पुच्छविषाणहीन:।
तृणं न खादन्नपि जीवमानस्तद्भागधेयं परमं पशूनाम ।।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, जो समाज में रहते हुए ज्ञान, शील, गुण, धर्म के साथ विद्या का प्रयोग करते हुए सांसारिक वासनाओं से मन हटाकर ईश्वर को प्रसन्न करने के उद्योग लगा रहता हैं कहा गया है कि–

येषां न विद्या न तपो न दानं
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्म:।

---

[3] नीति शास्त्र

ते मर्त्यलोके भूवि भारभूता
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

समाज को तेजस्विता तथा स्वाभिमान की सीख प्रदान करने वाले भर्तृहरि का श्लोक के द्वारा कहना कि नीच के द्वारा कुकृत्यों को करते हुए भी लज्जित न होना तथा सज्जन और स्वाभिमानी पुरुषों के द्वारा पुरुषार्थ के अनुसार ही फल की आकांक्षा करना उसकी चेतना का ही प्रतीक हैं कहा भी गया है कि-

क्षुत्क्षामोऽपि जराकृशोऽपि शिथिलप्रायोऽपि
कष्टां दशामापन्नोऽपि विपन्नदीधितिरपि प्राणेषु नश्यत्स्वपि।
मत्तेभेन्द्रविभिन्नकुम्भपिशितग्रासैक बद्धस्पृह
किं जीर्णं तृणमत्ति मानमहतामग्रेसर: केसरी।।

मनुष्य को हाथी के समान सस्नेह गम्भीरता, के व्यवहार से युक्ति अत्यधिक अनुनय वाक्यों से युक्त होने का गुण नीति शास्त्र से प्राप्त होती है।

लाङ्गूलचालनमधश्चरणावपातम्
भूमौ निपत्य वदनोदर दर्शनं च
श्वा पिण्डदस्य कुरुते गज पुङ्गवस्तु
धीरं विलोकयति चाटुशतैश्च मुङ्क्ते।।

सुख और दुख दोनों परिस्थितियों में अपनों के साथ रहना चाहिए। जो सम्पद् में साथ तथा विपद् में त्याग करके साथ छोड़ दे ऐसे अधम लोगों की संसार निंदा करता है। यह कार्य मानियों के योग्य नहीं होता। पिता को कष्ट में छोड़कर अपनी प्राण-रक्षा के लिए मैनाक का समुद्र में छुपना और वहाँ आनन्द पूर्वक जीवन-यापन करना गलत बात है। वर्तमान समय में अपने माता-पिता को वृद्धाश्रम में अनाथालय में छोड़ना तथा विपत्ति में डालना निन्दायुक्त कार्य है। इस निन्दा से पूर्ण कार्य को रोकने के लिए सामाजिक चेतना की आवश्यकता है जो हमें नीति ग्रन्थों से प्राप्त होता है। नीतिग्रन्थों में भर्तृहरि कृत नीतिशतक में समाज के उत्थान के लिए अनेक श्लोकों में वर्णन प्राप्त होता है जिसका अध्ययन तथा अनुकरण कराते हुए समाज को जागृति किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. नीति-शतक बाबूहरिदास वैद्य हरिदास एण्ड कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड 2014